17 मार्च 2016, कुल पृष्ठ : 12, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

वर्ष : 38, अंक : 24 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये
मार्च (द्वितीय), 2016 (वीर नि. संवत्-2542) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

श्री टोडरमल स्मारक भवन, जयपुर में -

स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष का मंगल शुभारंभ

● पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष की मंगलमयी शुरुआत ● अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ ● 200 से अधिक स्नातक विद्वानों की उत्साहपूर्ण उपस्थिति ● पंचपरमेष्ठी विधान का भव्य आयोजन ● पण्डित संजयजी मंगलायतन द्वारा ज्ञानवर्धक कथाओं का आयोजन ● डॉ. गौरव जैन सौगानी द्वारा आध्यात्मिक भजन संध्या का आयोजन ● श्री जिनेन्द्र रथयात्रा का भव्य आयोजन ● वर्षभर चलेंगे कार्यक्रम

जयपुर (राज.) : आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के पुण्य प्रभावना योग में उनकी प्रेरणा और करकमलों से स्थापित आध्यात्मिक गतिविधियों के प्रमुख केन्द्र के रूप में विख्यात पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट अपनी स्थापना के 50 वर्ष मनाने जा रहा है। पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष एवं चतुर्थ वार्षिक महोत्सव का शुभारंभ 26 फरवरी को प्रात: श्री निहालचंद घेवरचंदजी जैन परिवार जयपुर द्वारा ध्वजारोहण के साथ हुआ।

यह आयोजन अनेक मांगलिक आयोजनों सहित संपन्न हुआ। 26 फरवरी को प्रात: पंचपरमेष्ठी विधान के उपरान्त प्रवचन मंडप का उद्घाटन श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी परिवार जयपुर द्वारा तथा मंच का उद्घाटन श्री शांतिलालजी चौधरी परिवार भीलवाड़ा द्वारा किया गया। अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन मेरठ के उत्साही कार्यकर्ता श्री अजयजी जैन, श्री सौरभजी जैन व श्री अंबुजजी जैन ने स्वस्तिक बनाकर समारोह का शुभारंभ किया।

प्रसिद्ध रत्नव्यवसायी एवं दिगम्बर जैन महासमिति के भूतपूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री विवेकजी काला जयपुर की अध्यक्षता, सुप्रसिद्ध हृदयरोग चिकित्सक डॉ. सुभाषजी काला के मुख्य आतिथ्य में गौरवशाली सभा

(शेष पृष्ठ 4 पर ...)

ध्वजारोहणकर्त्ता श्री निहालचंदजी जैन

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

'संतोषी सदा सुखी, बहुधंधी बहु दुखी' का सिद्धांत अब धीरे-धीरे डॉ. धर्मचन्द की समझ में आने लगा था; क्योंकि बहुधंधी होने के कारण वे राजू पर उतना ध्यान नहीं दे पाये, जितना उसके जीवन के विकास के लिये आवश्यक था। उनके एकमात्र पुत्र राजू के आवारा होने में उनका धनोपार्जन में अतिव्यस्त रहना भी एक कारण था। पुत्र के लोभ में उन्होंने परिवार तो बढा लिया था, पर अब उसके भरण-पोषण के लिये धनोपार्जन करने में उन्हें दिन-रात एक करने पड़ रहे थे।

जिसके लिये डॉ. धर्मचन्द यह सबकुछ कर रहे थे, वही उनका इकलौता बेटा यथोचित मार्गदर्शन व देखरेख की कमी के कारण किसी भी कक्षा में अच्छे अंकों से सफल नहीं हुआ। यद्यपि उसकी बुद्धि अच्छी थी, यदि उसे यथोचित मार्गदर्शन और पढने का पर्याप्त मौका मिलता तो वह प्रथम श्रेणी में ही हमेशा उत्तीर्ण होता। पर, दादा-दादी और बहिनों के काम के दबाव में वह कभी ढंग से पढ ही नहीं पाया था।

डॉ. दम्पत्ति की भी अपनी एक समस्या थी, वे बेचारे मजबूर थे, उनका धनार्जन में उलझने का सबसे बड़ा कारण उनकी तीन-तीन जवान कन्यायें थीं। वैसे वे स्वभावत: संतोषी प्राणी थे, पर परिस्थिति ही कुछ ऐसी निर्मित हो गई थी कि उन्हें धनार्जन के सिवाय दूसरा कोई रास्ता ही दिखाई नहीं देता था।

तीनों ही लड़कियाँ उच्च शिक्षा ले रही थीं, तीनों की शादी की समस्या सामने अलग मुँह उठाये खड़ी थी, दुर्भाग्य से लड़कियाँ भी रूप-रंग और कद-काठी में इतनी सुन्दर और आकर्षक नहीं थीं कि कोई भी उन्हें ललककर ब्याह कर ले जाये। अत: दहेज के लिये उन्हें अधिक से अधिक धनार्जन करना उनकी आवश्यक आवश्यकता बन गई थी।

दहेज न लेने का संकल्प करना तो उन्हें आसान था, पर दहेज न देने की बात तो सोचना भी उन्हें पागलपन-सा लगता था; क्योंकि वह अपने हाथ की बात ही नहीं है।

वे सोचते थे, ''आदर्श की बातें कोई कितनी भी कर ले, पर जिसके घर में एक के बाद एक - तीन तीन कन्यायें ब्याह के योग्य हो गई हों, उसके दिल पर क्या बीतती है ? यह तो उसी के दिल में झाँककर देखना पड़ेगा।

जो स्थिति घूस के लेन-देन पर घटित होती है, वही स्थिति आज दहेज की है। घूस न लेने की प्रतिज्ञा तो हम-तुम कोई भी कर सकता है, पर घूस न देने की कसम कैसे खाई जा सकती है ? खासकर वहाँ, जहाँ घर से बाहर कदम रखा नहीं कि हर कदम पर घूस के टुकड़े डालने ही पड़ते हों भूखे भेड़ियों को। इस पर तुर्रा यह कि वह भी सलीके से दी जाये। घूस देना भी एक आर्ट है, कला है, जो हर एक के बलबूते की बात नहीं है। इस कारण सीधे-सादे सज्जनों का, ईमानदार आदमियों का तो घर से बाहर निकलना ही कठिन हो गया है।

यदि हम ट्रेन में बैठने के लिये टी.टी.आई. को पचास का नोट नहीं चढायें तो वह भी हमें ट्रेन में नहीं चढने देता है। बोलो ! कोई क्या करे ऐसी स्थिति में ? यात्रायें तो करनी ही हैं, कभी-कभी तो आरक्षण के बावजूद भी टी.टी. का टैक्स चुकाना आवश्यक हो जाता है, वरना क्या प्रमाण कि यही तुम्हारा नाम है? और वर्मा का शर्मा तथा शर्मा का वर्मा लिखा जाना जितनी सामान्य भूल है। उस सामान्य सी भूल को बिना घूस दिये सुधारना व यात्रा सुलभ कराना उतना ही दुर्लभ है।

ये तो अब विश्वव्यापी समस्यायें बन गई हैं। इनके बारे में अधिक सोचना ही पहाड़ से माथा मारने जैसा लगता है। हाँ, यदि दहेज और घूस लेने वालों को ही थोड़ा-बहुत नैतिकता का पाठ मिलता रहे और शासन भी थोड़ा अनुशासन की ओर ध्यान दे तो शायद कुछ सुधार हो सकता है। पर बेचारे शासन को अपनी कुर्सी बचाने से ही फुरसत नहीं है, वह अनुशासन-प्रशासन कब देखे ?

घूस देने वाले भी अपराधी हो सकते हैं, पर उनका अपराध शायद अक्षम्य अपराध नहीं है; क्योंकि ऐसा कौन है जो पसीने की कमाई को पानी में बहाना चाहेगा; पर उसकी मजबूरी है, बाध्यता है।

यदि वजन रखे बिना फाइल ही टेबल पर से उड़ जाये - गायब हो जाये तो उसे दबाने और समय पर आगे बढाने के लिये वजन तो रखना ही पड़ेगा न ? यदि कायदे से ही सब काम समय पर हो जाये तो कोई बेकायदा काम क्यों करेगा ?

खैर ! अभी डॉ. धर्मचन्द की समस्या घूस की नहीं, दहेज की थी। डॉक्टर ने बहुत सोचा, परवह बिना दहेज दिये निवृत्त नहीं हो पाया। अस्तु; जो हुआ सो हो गया, डॉक्टर दम्पत्ति अब संतुष्ट थे। अब वे तीनों बेटियों की शिक्षा और शादियाँ सम्पन्न कर चुके थे, उनके माता-पिता भी दिवंगत हो गये थे, अब केवल पति-पत्नी और 'हम दो हमारा एक' -कुल तीन ही प्राणी घर में रह गये थे।

राजू पढ नहीं सका था, उसका उन्हें उतना अफसोस नहीं था, पर वह आवारा हो गया था, यह उनकी चिंता का विषय

अवश्य था।

उन्होंने सोचा -''नौकरी तो वैसे भी नहीं करानी थी। न बन सका डॉक्टर तो न सही, मेडीकल स्टोर्स खुलवा देंगे। वह भी आरामदायक काम है, पर पहले इसमें कुछ सदाचार के संस्कार पड़ जावें और इसका यह आवारापन समाप्त हो, इसके लिये इसे कुछ दिन को कहीं बाहर ऐसे स्थान पर रखना होगा, जहाँ इसे थोड़ा सदाचार का वातावरण मिले और इन आवारा दोस्तों का साथ छूटे। साथ ही इसकी कम से कम ग्रेज्युएशन तक पढाई भी हो जावे। आजकल बिना ग्रेज्युएट हुये तो कोई पढा-लिखा ही नहीं कहलाता। तब तक यह शादी के योग्य भी हो जायेगा। अभी उम्र ही क्या है ? बीस बरस का ही तो है। इतनी जल्दी धंधे मे लगाकर भी क्या करेंगे ? कमाई की तो कोई समस्या है नहीं। न भी कमाये तो भी इसके खर्च लायक दस-बारह हजार रुपये मासिक आय तो मकान किराया और ब्याज वगैरह से ही हो जायेगी।

पर खाली दिमाग शैतान का घर होता है, अत: धंधे में उलझाना भी जरूरी है। पर अभी नहीं, अभी तो कम से कम तीन बरस के लिये इसे कहीं बाहर ऐसी जगह भेजना ही चाहिये।

इतने लम्बे सोच-विचार के बाद भी उन्हें यह समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर भेजें तो भेजे कहाँ ? कोई छात्रावास ? कोई हॉस्टल ? कोई रिश्तेदारी ? उन्हें कहीं कोई उपयुक्त जगह नजर नहीं आ रही थी। सोचते-सोचते संयोग से बैठक की सेंटर टेबल पर नजर चली गई, उस पर एक मासिक पत्रिका पड़ी थी, जिसके चौथे कवर पृष्ठ पर ही बड़े-बड़े अक्षरों में लिखा था, 'आत्मार्थी छात्रों को अपूर्व अवसर'। डॉक्टर ने कौतूहलवश यों ही उठाकर देखा, दो-चार लाइनें पढीं तो उन्हें ऐसा लगा कि यह तो राजू के हिसाब से बहुत ही अच्छी जगह है। क्यों न इस 'जैन सिद्धान्त महाविद्यालय' से सम्पर्क किया जाये ?

डॉक्टर जिसकी खोज में था, घर बैठे ही उसका समाधान उसे मिल गया था, इसलिये वह बहुत प्रसन्न था।

डॉक्टर तो कभी उस पत्रिका का ग्राहक बना नहीं था। आज तक उस पत्रिका को कभी उठाकर पढा भी नहीं था। डॉक्टर के पिताजी जरूर जैन पत्र-पत्रिकाओं के पढने के शौकीन थे और इनके आजीवन सदस्य भी थे। वे स्वयं भी पढा करते थे और मरीजों को पढाने के लिये डिस्पेंसरी के वेटिंग रूम में भी रख दिया करते थे।

दादाजी की भावनाओं के अनुसार वह सिलसिला अब और अधिक व्यवस्थित कर दिया गया है; क्योंकि मरने के बाद माता-पिता के प्रति भक्ति-भावना कुछ अधिक ही हो जाती है। उनके जीते-जी भले ही हम उनसे पानी की भी न पूछ पाये हों, पर मरने के बाद उनके चित्रों पर मालायें अवश्य डालते हैं। काश ! उनके जीवनकाल में यदि हम उनकी भावनाओं की कुछ कद्र कर पायें तो उनकी आत्मा को अधिक संतुष्टि दे सकते हैं। अस्तु !

सर्वप्रथम तो डॉक्टर ने मन ही मन अपने स्वर्गीय पूज्य पिताजी को धन्यवाद दिया; क्योंकि धन तो वे दे ही गये थे, धर्म के साधन भी दे गये थे और दे गये थे उस ज्वलंत समस्या का समाधान, जिसके कारण वह आज अधिक परेशान हो रहा था।

संयोग से राजू भी मैट्रिक में सैकण्ड डिविजन उत्तीर्ण हो गया था। बुद्धि में तो तेज था ही, अब उसे पढने को समय भी पर्याप्त मिल गया था।

''जो लौकिक कार्यों में होशियार होते हैं, वे ही पारलौकिक कार्यों में भी सफल होते हैं, केवल उसकी वृत्ति बदलने की देर है। कहा भी है -'ये कम्मे सूरा: ते धम्मे सूरा:' निश्चय ही यह काम वहाँ आसानी से हो ही जायेगा''- ऐसा विचार कर डॉक्टर ने राजू को उसी महाविद्यालय में प्रविष्ट कराने का निश्चय कर लिया था।

पर जैसे ही यह बात उसने अपनी पत्नी, बेटियों और रिश्तेदारों से कही तो कोई भी इस बात के लिये राजी नहीं हुआ। सभी एक स्वर में डॉक्टर की बात का विरोध करने लगे।

अरे ! क्या धरा है उस पढाई में ? वहाँ भेजकर कोई पण्डित थोड़े ही बनाना है। नहीं, नहीं; वहाँ नहीं जायेगा हमारा राजू ...।

बड़ी लड़की बोली -''पापा ! तुम्हें पता नहीं, वहाँ जाकर तो लड़के पूरे पण्डित बन जाते हैं, पण्डित। फिर वे हमारे-तुम्हारे साथ भोजन करना भी पसंद नहीं करते। उनके बड़े नखरे बढ जाते हैं। आपको पता है, वहाँ से लौटने पर ये लोग रात में नहीं खाते, अनछना पानी नहीं पीते, आलू-प्याज आदि कोई भी जमीकंद नहीं खाते और तो और दहीबड़ा, चाट और बाजार की मिठाइयाँ भी नहीं खाते, और पता नहीं क्या-क्या नहीं खाते ? अच्छी तरह सोच लो, समझ लो ! हमारी दिल्ली से एक लड़का गया था। वह वहाँ ऐसा बिगड़ा कि वहाँ से आकर अपने माँ-बाप को ही उपदेश देने बैठ गया। उन बेचारों को केवल उसके कारण दिन में ही खाना बनाना पड़ता है। आजकल आलू-बैंगन के सिवाय और साग-सब्जियाँ आती ही क्या हैं बाजार में ? पर उन हजरत को यह कुछ चलता ही नहीं है। इसकारण उसकी माँ बहुत परेशान रहती है। कहती है -'रोज-रोज क्या बनाकर रख दें, अपनी तो कुछ समझ में नहीं आता। अच्छा आ गया पण्डित बनके।' (क्रमश:)

(पृष्ठ 1 का शेष...)

आयोजित हुई, जिसे संबोधित करते हुये डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने स्मारक की जन्मकथा पर विस्तार से प्रकाश डाला तथा भवन के निर्माता श्री पूरनचंदजी गोदिका और आजीवन महामंत्री रहे श्री नेमीचंदजी पाटनी को याद करते हुये उनके द्वारा किये गये कार्यों की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। श्री विवेकजी काला ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि हमें अपने जीवन में संयम, तप, त्याग आदि को भी महत्व देना चाहिये तभी जीवन सफल होगा। मंच संचालन का भार कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने बखूबी वहन किया।

इस अवसर पर आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन तथा डॉ. भारिल्ल, पण्डित शांतिकुमार पाटील, डॉ. वीरसागर जैन, डॉ. संजीवकुमार गोधा तथा डॉ. मनीष शास्त्री मेरठ के प्रवचनों से समाज लाभान्वित हुई। यहाँ स्मरणीय है कि पंचपरमेष्ठी विधान के आमंत्रणकर्त्ता पण्डित सिद्धार्थ कुमार दोशी रतलाम थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित संजय शास्त्री मंगलायतन के निर्देशन में पण्डित गोमटेश शास्त्री व महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा संपन्न कराये गये।

महोत्सव में सांस्कृतिक कार्यक्रमों की छटा

(1) आध्यात्मिक भजन संध्या में झूम उठे श्रद्धालु -

दिनांक 26 फरवरी की रात्रि में गौरव जैन सौगानी, श्रीमती दीपशिखा जैन एवं श्रीमती नेहा जैन चांदवाड द्वारा आध्यात्मिक भजन संध्या प्रस्तुत

आध्यात्मिक भजन संध्या

की गई। इस अवसर पर स्वर कोकिला श्रीमती कनकप्रभा हाडा द्वारा प्रस्तुत भजनों से सभा में आह्लाद का वातावरण बन गया। अध्यात्म से सराबोर इन भजनों की खूबसूरत प्रस्तुति का सैंकड़ों लोगों ने देररात तक मंत्रमुग्ध होकर लाभ लिया।

(2) भगवान महावीर के पूर्व भवों एवं आचार्य कुन्दकुन्द के जीवन पर आधारित कथा -

दिनांक 27 फरवरी की रात्रि में पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा भगवान महावीर के पूर्व भवों की कथा अत्यंत सुन्दर व आकर्षक ढंग से प्रस्तुत की गई।

आध्यात्मिक कथाओं का वांचन

दिनांक 28 फरवरी की रात्रि में आचार्य कुन्दकुन्द के जीवन पर आधारित कथा की अत्यंत आकर्षक प्रस्तुति हुई।

दोनों कथाओं के आयोजन में महाविद्यालय के छात्रों के साथ-साथ उपस्थित जनसमुदाय ने अत्यंत हर्ष उल्लास के साथ भाग लिया।

धूमधाम से निकली श्रीजी की विशाल शोभायात्रा

वार्षिक महोत्सव के अंतिम दिन 28 फरवरी को प्रात: 9.30 बजे से जिनेन्द्र भगवान की विशाल शोभायात्रा का भव्य आयोजन किया गया, जिसके पूर्व आयोजित स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष उद्घाटन समारोह की विशाल सभा को संबोधित करते हुये मुख्य अतिथि श्री गुलाबचंदजी कटारिया (माननीय गृहमंत्री-राजस्थान सरकार) ने टोडरमल स्मारक व

स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष उद्घाटन सभा में मंचासीन महानुभाव

स्वर्ण जयंती महोत्सव वर्ष उद्घाटन सभा में उपस्थित साधर्मीजन

डॉ. भारिल्ल की प्रशंसा करते हुये कहा कि टोडरमल स्मारक में संस्कृत के विद्वान तैयार हो रहे हैं, यह एक ज्ञानयज्ञ है, जो कि निरंतर चलते रहना चाहिये। टोडरमल स्मारक ज्ञान व संयम की कमी को दूर कर, भारतीय संस्कृति को जीवित रखकर देशसेवा का अपूर्व कार्य कर रहा है। जब तक इस प्रकार का ज्ञानयज्ञ चलता रहेगा, तब तक कोई भी इस देश की संस्कृति को नष्ट नहीं कर सकता।

विशिष्ट अतिथि के रूप में राजस्थान सरकार के शिक्षामंत्री श्री कालीचरणजी सर्राफ ने कहा कि श्री पूरनचंदजी गोदिका द्वारा रोपा गया यह पौधा अब वटवृक्ष बन चुका है। यह टोडरमल स्मारक संस्कृत विद्वानों

रथयात्रा में सम्मिलित साधर्मीजन

की खान है। जब तक इसमें संस्कृत के विद्वान तैयार होते रहेंगे, तब तक भारतीय संस्कृति सुरक्षित रहेगी।

कार्यक्रम का मंगलाचरण प्रतिष्ठाचार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना ने एवं संचालन श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने किया। समागत अतिथियों का परमात्मप्रकाश भारिल्ल, अध्यात्मप्रकाश भारिल्ल तथा विपिनजी शास्त्री ने माल्यार्पण व श्रीफल भेंटकर स्वागत किया।

इस अवसर पर आयोजित सभा में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर के अतिरिक्त श्री गुलाबचंदजी कटारिया (माननीय गृहमंत्री - राजस्थान सरकार), श्री कालीचरणजी सर्राफ (माननीय शिक्षामंत्री - राजस्थान सरकार), श्री रामचरणजी बोहरा (सांसद), श्री गौतम दक (विधायक-बड़ी सादड़ी), श्री सुशीलकुमारजी गोदिका जयपुर, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना, श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री विमलकुमारजी जैन दिल्ली, श्री महेन्द्रकुमाजी पाटनी जयपुर, श्री चंद्रभानजी जैन सिद्धायतन, श्री महेन्द्रजी चौधरी भोपाल, श्री गुलाबचंदजी जैन सागर, श्री नरेशकुमारजी सेठी जयपुर, श्री राजेन्द्रजी गोधा जयपुर, जस्टिस नरेन्द्रकुमारजी जैन जयपुर, श्री सुधांशुजी कासलीवाल जयपुर, श्री ताराचंदजी पाटनी जयपुर, श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ आदि महानुभावों ने टोडरमल स्मारक भवन के सामने पार्किंग स्थल पर बने 4-5 फुट ऊँचे और 50 फुट लम्बे विशाल मंच पर खड़े होकर स्वर्ण जयंती ध्वज दिखाकर शोभायात्रा का प्रारंभ किया।

श्री टोडरमल स्मारक भवन से प्रारंभ हुई इस विशाल शोभायात्रा में जिनेन्द्र भगवान को लेकर श्री संजयजी कोठारी रथ पर बैठे एवं श्री ताराचंदजी सोगानी जयपुर सारथी के रूप में रथ पर बैठे। इसके अतिरिक्त चार बग्गियों में श्री सिद्धार्थजी दोशी रतलाम प्रथमानुयोग, श्री महेन्द्रजी पाटनी जयपुर करणानुयोग, श्री अजितजी तोतुका जयपुर चरणानुयोग एवं श्री शांतिलालजी जैन जयपुर द्रव्यानुयोग ग्रन्थ लेकर चल रहे थे। महाविद्यालय के सैकड़ों वर्तमान एवं भूतपूर्व स्नातक विद्वान, अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन, जयपुर महानगर के सभी युवा सदस्यों के साथ-साथ सैकड़ों की संख्या में साधर्मी पुरुष भाई अपने धवल वस्त्रों में केसरिया दुपट्टा डालकर अध्यात्म और भक्ति से सराबोर भजनों पर झूमते हुए चल रहे थे। विशेष रूप से तैयार राजस्थानी पगड़ी को पहनकर चल रहे साधर्मीजनों से शोभायात्रा में चार चाँद लग रहे थे।

शोभायात्रा के मार्ग में पड़ने वाले सभी जैन परिवारों द्वारा श्रीजी के रथ का स्वागत मंगल स्वस्तिक चिह्न बनाकर, श्रीजी को अर्घ्य समर्पित कर किया गया।

स्वर्ण जयंती ध्वज दिखाकर शोभायात्रा प्रारंभ करते हुये महानुभाव

श्रद्धा और भक्ति के उल्लासपूर्ण वातावरण में संपन्न हुआ महामस्तकाभिषेक

दिनांक 28 फरवरी को शोभायात्रा के पश्चात् सीमंधर जिनालय एवं पंचतीर्थ जिनालय में विराजमान सभी जिनबिम्बों के महामस्तकाभिषेक का मंगलमयी आयोजन किया गया।

सीमंधर भगवान का प्रथम अभिषेक का सौभाग्य श्री सुशीलजी गोदिका जयपुर ने एवं स्फटिक रत्न की चन्द्रप्रभ भगवान की प्रतिमा का प्रथम

मस्तकाभिषेक करते हुये साधर्मीजन

अभिषेक श्री अजितप्रसादजी दिल्ली द्वारा किया गया।

पंचतीर्थ जिनालय में श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ परिवार द्वारा भगवान महावीर का, श्री अजितप्रसादजी जैन एवं श्री आदीशजी जैन दिल्ली द्वारा भगवान आदिनाथ, श्री प्रदीपजी सोनी आगरावाले जयपुर द्वारा श्री शान्तिनाथ भगवान, श्री हिमांशुजी जैन सुपुत्र श्री महाचंदजी जैन जयपुर द्वारा श्री बाहुबली भगवान एवं श्री शोभित काला व नैवेद्य काला जयपुर द्वारा श्री पार्श्वनाथ भगवान का सर्वप्रथम अभिषेक किया गया। इसके अतिरिक्त पद्मासन सीमंधर भगवान, युगमन्धर भगवान, बाहु भगवान एवं सुबाहु भगवान का अभिषेक क्रमश: श्री सुशीलजी गोदिका जयपुर, श्री लक्ष्मीचंदजी सीकरवाले जयपुर, श्री संजयजी कोठारी मुम्बई व श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा द्वारा किया गया।

चतुर्मुख वासुपूज्य भगवान का प्रथम अभिषेक डॉ. महेशजी शास्त्री भोपाल ने एवं नेमिनाथ भगवान का प्रथम अभिषेक श्री ध्रुवेशजी शास्त्री एवं ऋषभजी शास्त्री अहमदाबाद द्वारा किया गया।

यह संपूर्ण कार्यक्रम ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना एवं पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के निर्देशन में किया गया।

इसप्रकार यह महोत्सव अत्यंत हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ।

मस्तकाभिषेक के अवसर पर उपस्थित साधर्मीजन

वार्षिकोत्सव – कैमरे की नजर में...

वार्षिकोत्सव – अखबारों की नज़र में...

स्वर्ण जयंती महोत्सव

त्रिदिवसीय महामस्तकाभिषेक व चतुर्थ वार्षिक महोत्सव आज से

जयकारों के बीच हुआ ध्वजारोहण

महामस्तकाभिषेक व चतुर्थ वार्षिक महोत्सव 26 से

महामस्तकाभिषेक व चतुर्थ वार्षिक महोत्सव आज से

त्रिदिवसीय महामस्तकाभिषेक व चतुर्थ वार्षिक महोत्सव शुरू

पंच परमेष्ठी विधान

शोभायात्रा व महा मस्तकाभिषेक आज

त्रिदिवसीय महामस्तकाभिषेक व चतुर्थ वार्षिक महोत्सव का समापन

महामस्तकाभिषेक व वार्षिक महोत्सव शुरू

महामस्तकाभिषेक वार्षिक महोत्सव कल से

आया मंगल दिन मंगल अवसर...

महामस्तकाभिषेक आज से

महामस्तकाभिषेक व चतुर्थ वार्षिक महोत्सव कल से

महामस्तकाभिषेक व चतुर्थ वार्षिक महोत्सव का समापन

महामस्तकाभिषेक 26 से
श्रीजी की शोभायात्रा में उमड़े श्रद्धालु

महामस्तकाभिषेक व वार्षिक महोत्सव 26 से

परमेष्ठी विधान में भाव-विभोर हुए श्रद्धालु

चतुर्थ वार्षिक सम्मेलन

जयपुर। बापू नगर स्थित ज्ञानतीर्थ पंडित टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे पंचतीर्थ व सीमंधर जिनालय के पांचवें का महामस्तकाभिषेक व चतुर्थ वार्षिक सम्मेलन के दूसरे दिन शनिवार को सब हुई। इसमें पहले जयकारों के बीच पंच परमेष्ठी विधान हुआ। इसमें श्रद्धालु भाव-विभोर होकर नाचे। प्रवचन में डॉ. हुकुम चंद भारिल्ल ने धर्म को आत्मसात कर जीवन को सुखद बनाने की बात कही।

जयकारों ... महामस्तकाभिषेक

पाड्या जैन ने बताया कि सुबह नित्य नियम पूजा व मंडप उद्घाटन आदि हुए। शाम को भजन संध्या में गौरव व दीपशिखा जैन ने प्रभु का गुणगान किया गया।

शनिवार को श्रीपंच परमेष्ठी विधान व प्रवचन होंगे। रविवार को रथयात्रा निकाली जाएगी। इस मौके पर निहालचंद जैन, शांतिलाल चौधरी, डॉ सुभाष कासलीवाल, विवेक काला, डॉ. हुकुमचंद भारिल्ल आदि मौजूद थे।

महोत्सव 26 से

... महोत्सव ... के बीच हुआ श्रीजी का महामस्तकाभिषेक

श्रीजी की शोभायात्रा में उमड़े श्रद्धालु

दृष्टि का विषय

24 छठवाँ प्रवचन -डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

अब यदि वह उपयोग (पर्याय) त्रिकाली ध्रुव में अभेद-एकाकार नहीं हो तो आत्मा का ध्यान नहीं होगा। इन दोनों के बीच में यदि थोड़ी भी सांध रहेगी तो आत्मा का ध्यान नहीं होगा।

समयसार नाटक में एक दोहा आता है –

''सतरंज खेलै राधिका, कुबिजा खेलै सारि।
याकै निसिदिन जीतवौ, वाकै निसिदिन हारि।।१।।[१]

राधिका अर्थात् सुबुद्धि शतरंज खेलती है, इसमें उसकी सदा जीत होती है और कुब्जा अर्थात् दुर्बुद्धि चौपड़ खेलती है, इससे उसकी हमेशा हार होती है।''

अगर किसी से पूछा जाये कि शतरंज और चौपड़ में क्या अन्तर है?

शतरंज में अपनी बुद्धि काम करती है अर्थात् आप घोड़ा या हाथी, जहाँ भी चलना हो, वहाँ चल सकते हैं; सबकुछ बुद्धि पर निर्भर है। लेकिन चौपड़ में सबकुछ पासे पर निर्भर है, यदि पासे चलने पर चार आए तो चार घर चलो और छह आ जाये तो छह घर चलो। दूसरों के हाथ में बाजी देना, जड़ पासों के हाथ में बाजी देना; उसका नाम चौपड़ है तथा अपने हाथ में ही बाजी रखना; उसका नाम है शतरंज। **मैं अपनी आत्मा का अनुभव स्वयं करूँगा, इसका नाम है शतरंज खेलना और कर्म के उदय से होगा, इसका नाम चौपड़ खेलना है।**

इसलिए मैं कहता हूँ कि शतरंज खेलनेवाले से दिन-रात जीतते ही रहते हैं, कभी हारते नहीं हैं। शतरंज खेलनेवालों में दोनों ही पक्ष जीतते हैं, उन दोनों में कोई भी नहीं हारता है; क्योंकि दोनों ही बुद्धि का प्रयोग करते हैं, लेकिन चौपड़ में जीतनेवाला भी हारता है; क्योंकि वहाँ बुद्धि की नहीं, भाग्य की चलती है।

इसप्रकार नाटक समयसार में और भी छन्द हैं –

''जाके उर कुबिजा बसै, सोई अलख अजान।
जाकै हिरदै राधिका, सो बुध सम्यक्‌वान।।[२]

जिसके हृदय में कुब्जा अर्थात् कुबुद्धि का वास है, वह जीव अज्ञानी है और जिसके हृदय में राधिका अर्थात् सुबुद्धि है, वह ज्ञानी सम्यग्दृष्टि है।''

आगे और भी कहा है –

''मूरख के घट दुरमति भासी।
पण्डित हिये सुमति परगासी।
दुरमति कुबिजा करम कमावै।
सुमति राधिका राम रमावै।।[१]

मूरख के हृदय में कुबिजा उपजती है और ज्ञानियों के हृदय में सुमति का प्रकाश रहता है। दुर्बुद्धि कुब्जा के समान है, नवीन कर्मों का बंध कराती है और सुबुद्धि राधिका है, आत्माराम में रमण कराती है।''

इसप्रकार नाटक समयसार में बनारसीदासजी ने १०-२० छन्द लिखे हैं। वस्तु के स्वरूप को समझने के लिए परमत के उदाहरण भी दिए जाते हैं। मैंने भी 'द्रव्य में पर्याय शामिल हो गई है' – यह समझाने के लिए राधा-कृष्ण का उदाहरण दिया है।

हमारे महाविद्यालय का एक विद्यार्थी पर्यूषण पर्व में प्रवचन हेतु दिल्ली गया था तो वहाँ किसी एक भाई ने उससे कहा कि डॉक्टर साहब से यह कहना कि उन्होंने एक किताब में यह गलत लिखा है कि पहले के जमाने में जब मन्दिर अंधेरे में होते थे तो गर्भगृह में भगवान के दर्शन करने के लिए जानेवाले लोग 'दीपक' लेकर जाते थे और वहाँ पर कीटाणु न हो जाये और वायु की शुद्धि के लिए 'धूप' जलाते थे; लेकिन अब तो सब खुला हो गया है, दीपक और धूप जलाने की जरूरत नहीं है – ऐसा कहने से धूप व दीपक के जलाने की सिद्धि होती है; इसलिए उनसे यह कहना कि वे उस किताब में यह अंश निकाल देवें।

अरे भाई ! उसमें तो उदाहरण के रूप में अजैनियों के मंदिर की चर्चा की है कि उनके यहाँ ऐसा होता था, वह जैनियों की चर्चा नहीं है। उसके बाद मैंने यह भी लिखा है कि अब तो सब खुला हो गया है; इसलिए न तो दीपक की जरूरत है और न धूप की जरूरत है।

इसप्रकार उसमें यह लिखा है कि धूप व दीपक जलाने की जरूरत नहीं है। मन्दिर का जो उदाहरण दिया, वह तो उदाहरण के तौर पर है। उदाहरण तो अजैनियों के भी दिए जाते हैं। जैन साहित्य में पण्डित टोडरमलजी, पण्डित बनारसीदासजी तथा आचार्यों ने भी अजैनियों के उदाहरण दिए हैं। सिद्धचक्रविधान में भी बहुत उदाहरण हैं।

अतएव किसी बात को समझाने के लिए अजैनियों के उदाहरण देना अनुचित नहीं है। (क्रमशः)

१. समयसार नाटक, पृष्ठ २८४ २. वही, पृष्ठ २८४

१. समयसार नाटक, पृष्ठ २७८-२७९

टोडरमल स्मारक भवन का –

स्वर्ण जयन्ती गीत

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

लो स्वर्ण जयन्ती वर्ष आ गया ज्ञानतीर्थ जिनधाम का,
जिसने जग में अलख जगाया वीतराग-विज्ञान का।
वास यहाँ भावी सिद्धों का ध्यान हो आतमराम का,
वीरकुन्द का टोडरमल का गुरुदेव कहान महान का।।

वीतरागता के पूजक हम हैं वीतराग के अनुगामी,
दिव्यध्वनि के अनुरागी जो तीन लोक में कल्याणी।
वीतराग जिनदेव गुरु का उपकार कभी न भुलायेंगे,
वीतराग के शिवा कहीं हम मस्तक नहीं झुकायेंगे।।

थामी हमने गुरुदेव से मशाल ये आतमज्ञान की,
कर्ता नहीं कोई किसी का शक्ति अमित गुणखान की।
कण स्वतंत्र क्रमबद्ध परिणमन ये थी सीख कहान की,
यह ज्योति अब सदा जलेगी हमें शपथ भगवान की।।

एक ध्येय है एक लक्ष्य बस ज्ञान के दीप जलायेंगे,
भगवन बनने का ये मारग सबको यह बतलायेंगे।
विषयभोग में नहीं रमेंगे नहीं किसी को उलझायेंगे,
हमतो नित बस देव गुरु के आतम के गुण गायेंगे।।

एक यही संकल्प हमारा स्वाध्याय वा तत्त्वप्रचार,
पहुंचा देंगे जिनवाणी को अखिल विश्व के हर घर द्वार।
जिनमंदिर हों गाँव-गाँव में हर गली मौहल्ले पठ्शाला,
हर व्यक्ति को सहज सुलभ हो यह शिक्षा देने वाला।।

नहीं किसी से उलझेंगे हम नहीं किसी को लक्ष्य करेंगे,
जो भी हमसे सहमत होगा उसको भी हम अपना लेंगे।
वैर विरोध किसी से करना यह मुमुक्षु का काम नहीं,
वीतराग के हम हैं उपासक राग-द्वेष का काम नहीं।।

सर्वसमाज में रहे एकता हों स्वतंत्र सभी निजचिंतन में,
ना रागद्वेष अरु वैमनस्य हो यहाँ किसी के भी मन में।
यह वीतराग का मारग तो भई सारे जग से न्यारा है,
यह मुक्ति का मारग है हमको प्राणों से भी प्यारा है।।

हम नहीं रुकेंगे नहीं झुकेंगे यह ध्वजा नहीं गिरने देंगे,
हम सिद्धशिला की ओर बढेंगे व साथ सभी को ले लेंगे।
नहीं पड़ाव यह नित प्रवाह है रुक कभी नहीं ये पायेगा,
स्वर्ण जयन्ती आज मनाते यह अनन्त तक जायेगा।।

स्मारक की गौरव गाथा

– ममता जैन 'मणि', दिल्ली

सोना अग्नि में तपकर ही, कुन्दन की आभा पाता है।
इतिहास आज स्मारक की ही, गौरव गाथा गाता है।।
टोडरमल प्राणों की बलि दे, जैनधर्म ध्वज फहराया।
उसी ध्वजा को स्मारक ने, देश विदेशों लहराया।।
दादा द्वय के संरक्षण में, जिनआगम व्याख्यान हुआ।
है फौज बनी नवयुवकों की, परमागम घर-घर में पहुँचा।।
किले देवगढ हर पत्थर में, भगवान दिखाई देते हैं।
हर गाँव नगर औ डगर-डगर, विद्वान दिखाई देते हैं।।
छोटे दादा का योगदान, क्या कभी भुलाया जायेगा ?
परमभाव को नय के द्वारा, सदा सिखाया जायेगा।।
शिक्षण शिविरों की उपलब्धि, से जन मानस परिचित है।
दिव्य ज्ञान की ज्योति जगे, अज्ञान तिमिर जो हरती है।।
जब-जब बसंत को आना हो, पतझड़ को सहना पड़ता है।
स्मारक की है शान अजब, यहाँ चिर बसंत ही रहता है।।
स्वर्ण-जयंती पर हम सब, संकल्प करें अपने उर में।
तत्त्वज्ञानमय जीवन हो, जिनधर्म बसे निज अंतर में।।

मंगलमय ये सदन...

– अंकुर शास्त्री, भोपाल

जो जैनजगत का प्राण है, गुलाबीनगर की जो शान है।
अरहंतों की वाणी बिखेरता, तत्त्वज्ञान की जो पहचान है।।
कुहासे को चीरती...निकली थी एक किरणऽऽऽ
मंगलमय.....मंगलमय, मंगलमय ये सदन।
टोडरमल स्मारक भवन...टोडरमल स्मारक भवन।।टेक।।
फंसा था जगत जब विषय भोग में, था तन्मय स्वयं के भवरोग में।
तब फहरी पताका समयसार की, दिखी चेतना जग के संयोग में।।
माँ जिनवाणी का ही चले...इकमात्र जहाँ पे हुकुमऽऽऽ
मंगलमय.....मंगलमय, मंगलमय ये सदन।
टोडरमल स्मारक भवन...टोडरमल स्मारक भवन।।1।।
विमुख थी जो पीढी सदाचार से, रहित थी जो आगम के संस्कार से।
दी औषध उसे भेदविज्ञान की, जब सींचा उसे सद्विचार से।।
वतन को हैं जिसने दिये...ढेरों युवा रतनऽऽऽ
मंगलमय.....मंगलमय, मंगलमय ये सदन।
टोडरमल स्मारक भवन...टोडरमल स्मारक भवन।।2।।
यू तो बीता है आधी सदी का सफर, पर भटका न अब भी जो अपनी डगर।
घर-घर में है जिनवाणी का वास अब, मुमुक्षु बसे हर गाँव-नगर।।
गुरु कहान के....सपनों का जो आंगनऽऽऽ
मंगलमय...मंगलमय, मंगलमय ये सदन।
टोडरमल स्मारक भवन...टोडरमल स्मारक भवन।।3।।

जैनपथप्रदर्शक के स्वामित्व का विवरण

फार्म नं. 4 नियम नं. 8

समाचार पत्र का नाम	:	जैन पथप्रदर्शक (हिन्दी)
प्रकाशन स्थान	:	श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 (राज.)
प्रकाशन अवधि	:	पाक्षिक
मुद्रक	:	श्री प्रमोदकुमार जैन (भारतीय) जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम.आई.रोड, जयपुर (राज.)
प्रकाशक का नाम	:	ब्र. यशपाल जैन (भारतीय) पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)
सम्पादक का नाम	:	श्री रतनचन्द भारिल्ल (भारतीय) श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)
स्वामित्व	:	पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर -15 (राज.)

मैं ब्र. यशपाल जैन एतद् द्वारा घोषणा करता हूँ कि मेरी अधिकृत जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 17-3-2016

प्रकाशक :
ब्र. यशपाल जैन
ट्रस्टी, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर

टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के वार्षिक -

पुरस्कार वितरण समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय में दिनाँक 25 फरवरी को सत्र 2015-16 में संपन्न खेलकूद प्रतियोगिताओं एवं साहित्यिक सप्ताह के विजेताओं व उपविजेताओं को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। साथ ही साथ अक्टूबर शिविर की डायरियाँ जमा करने वाले विद्यार्थियों को एवं जिनवाणी सज्जा प्रतियोगिता के अन्तर्गत 250 ग्रंथों को सुरक्षित तरीके से सजाने वाले उपाध्याय कनिष्ठ के 15 विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया।

पण्डित टोडरमल खेलरत्न पुरस्कार अक्षय जैन श्यामनिप्पाणी (शास्त्री प्रथमवर्ष), आचार्य अमृतचंद्र साहित्यरत्न पुरस्कार ऋषभ जैन दिल्ली (शास्त्री द्वितीय वर्ष) को प्रदान किया गया।

कार्यक्रम में महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, उपप्राचार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, श्री इन्द्रचंदजी कटारिया, श्री शांतिलालजी जैन अलवरवाले, श्री ताराचंदजी सोगानी, श्री कैलाशचंदजी सेठी, पण्डित संजयजी सेठी, पण्डित उदयजी शास्त्री, पण्डित गोमटेशजी शास्त्री आदि महानुभावों की गौरवमयी उपस्थिति रही।

कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय के अधीक्षक पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

पाठकों के पत्र...

टोडरमल स्मारक के 50वें वर्ष में प्रवेश के उपलक्ष्य में टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक नागपुर (महा.) निवासी पण्डित विपिनजी शास्त्री लिखते हैं -

....महामांगलिक प्रसंग है कि संस्था अपने जीवन के 50 बसंत पूरे कर रही है। अनेक झंझावातों के बावजूद यह संस्था अपने उद्देश्यों को पूरा करने में सफल रही है। ये इस युग का महान आश्चर्य ही है कि जहाँ एक समय में एक साथ पूरे देश में 5-7 विद्वान हुआ करते थे, वहाँ आज एक-एक शहर में इतने विद्वान हैं।

आत्मानुभूति और तत्त्वप्रचार के सूत्र से बंधी यह संस्था कभी भी पथभ्रष्ट नहीं हुई। पूज्य गुरुदेवश्री की छत्रछाया में बना यह तत्त्वज्ञान का वह इकलौता जलाशय है, जहाँ तत्त्वपिपासु बिना किसी भेदभाव के भवतापहारी ज्ञानामृत का पान करते अघाते नहीं हैं।

गुजरात के अलावा भी यदि गुरुदेवश्री द्वारा प्रचारित श्रुतधारा का बोलबाला दिखाई देता है तो वह इस संस्था की दूरदृष्टि का ही सुफल है...मेरे जैसे ना जाने कितने सौभाग्शाली होंगे जो गुरुदेवश्री से प्रत्यक्ष श्रुत ना मिलने पर भी उस श्रुत रंग में रंगे हुये हैं...ना केवल रंगे हुये हैं; अपितु दूसरों को रंगने का सफल प्रयास भी कर रहे हैं। ये इस संस्था का ही कमाल है।

इस संस्था की उपयोगिता एक छोटे से प्रश्न के उत्तर में छुपी है कि यदि यह संस्था ना होती ''तो''? बस इससे अधिक यहाँ कुछ नहीं कहना है।

इस अवसर पर मैं उस कुशल प्रज्ञा को नमन करता हूँ, जिसने इस संस्था की प्रमुख व महत्वपूर्ण गतिविधि 'महाविद्यालय' का ताना-बाना बुना और उन मनीषियों को जिन्होंने विद्यार्थियों को तत्त्वज्ञान देकर उनके जीवन को सींचा और उन धनवानों को जिन्होंने बुरा कहे जाने वाले धन को भी भला कहने लायक बना दिया। ●

शोक समाचार

(1) कलकत्ता निवासी श्री महावीरप्रसादजी सरावगी का दिनांक 5 मार्च को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत स्वाध्यायी थे। स्मारक भवन में महीनों रहकर आप प्रत्येक शिविर का नियमित लाभ लेते थे तथा टोडरमल स्मारक की गतिविधियों में भरपूर सहयोग करते थे।

(2) सिंगोड़ी (म.प्र.) निवासी श्री पुष्पचंद विमलकुमारजी जैन की माताजी एवं श्री राजेशकुमारजी शास्त्री की दादीजी **श्रीमती कंचनबाई जैन** का दिनांक 18 फरवरी को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में ज्ञानप्रचार हेतु 500/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनन्द को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

30 मार्च से 6 अप्रैल	सिंगापुर	शिविर
22 से 24 अप्रैल	उदयपुर (राज.)	कन्या छात्रावास का उद्घाटन
4 से 7 मई	देवलाली	गुरुदेव जयन्ती
8 मई	दिल्ली	उपकार दिवस
15 मई से 1 जून	विदिशा	प्रशिक्षण शिविर
15 जून से 15 जुलाई	विदेश यात्रा	धर्मप्रचारार्थ

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष 1967-2017

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष के उपलक्ष्य में वर्षभर तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार से संबंधित अनेक योजनायें संचालित की जावेंगी, जिसमें मुख्य कार्यक्रम निम्नानुसार हैं -

(1) शाश्वत तीर्थधाम सम्मेद शिखर में आगामी 9 से 14 अक्टूबर तक 1008 इन्द्र-इन्द्राणी द्वारा समयसार विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का विशाल आयोजन किया जावेगा। इस अवसर पर स्नातक परिषद्, अ.भा. जैन युवा फैडरेशन एवं अ.भा. दि.जैन विद्वत्परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन इत्यादि अनेक महत्वपूर्ण कार्यक्रम भी आयोजित किये जावेंगे।

नोट :- शिखरजी विधान के संदर्भ में विस्तृत रूपरेखा आगामी अंक में प्रकाशित की जावेगी।

(2) ग्रीष्मकाल के अवसर पर देशभर में बालसंस्कार शिविरों एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविरों, युवा शिविरों का आयोजन होगा।

(3) पूरे वर्ष देशभर के अनेक स्थानों पर समयसार विधान का आयोजन किया जावेगा।

(4) देशभर में स्वाध्याय सभाओं और व्यक्तिगत स्वाध्याय हेतु स्वाध्याय वर्ष के रूप में मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ का स्वाध्याय किया जावेगा। इसके लिये अनेक प्रकार के प्रश्न-पत्र, अध्ययन सामग्री उपलब्ध कराई जावेगी।

(5) आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा विशेष रूप से प्रतिपादित क्रमबद्धपर्याय, पुण्य-पाप, सम्यग्दर्शन आदि विषयों पर देशभर में विचार गोष्ठियों का आयोजन किया जावेगा।

(6) युवा पीढी को तत्त्वज्ञान से परिचित कराने हेतु अंग्रेजी भाषा में पाठ्यक्रम बनाकर, उसे पढाने वाले अध्यापकों को तैयार किया जावेगा।

(7) गाँव-गाँव में पत्राचार द्वारा जैनदर्शन की पढाई हेतु लोगों को प्रेरितकर टोडरमल मुक्तविद्यापीठ का संचालन करना।

(8) तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार हेतु और भी अनेक प्रकार की योजनाओं को बनाकर उनका तात्कालिक व स्थायी रूप से संचालन करना।

टोडरमल दिग. जैन सिद्धांत महाविद्यालय में –

आदर्श पुरस्कारों की घोषणा

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में पंचकल्याणक के चतुर्थ वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनाँक 28 फरवरी को महाविद्यालय में सत्र 2015-16 के आदर्श पुरस्कारों की घोषणा हुई। जिसमें उपाध्याय कनिष्ठ से दुर्लभ जैन गुड़ाचंद्रजी, उपाध्याय वरिष्ठ से अमन जैन दिल्ली, शास्त्री प्रथम वर्ष से प्रशांत जैन खेकड़ा, शास्त्री द्वितीय वर्ष से रमन जैन मौ, शास्त्री तृतीय वर्ष से सौरभ जैन फूप एवं समस्त कक्षाओं में से पारस जैन

आदर्श पुरस्कार प्राप्त करते हुये विद्यार्थीगण

खेकड़ा (शास्त्री प्रथमवर्ष) आदर्श विद्यार्थी रहे।

सत्र की आदर्श कक्षा उपाध्याय कनिष्ठ चुनी गई। इसके अतिरिक्त श्रुत-आराधक विशेष पुरस्कार अच्युतकांत जैन जसवंतनगर (शास्त्री तृतीयवर्ष), चिकित्सा विभाग में विशेष योगदान हेतु ज्ञायक जैन अमरमऊ (शास्त्री द्वितीय वर्ष), विशेष उन्नति पुरस्कार जी.जगदीशन चैन्नई (उपाध्याय कनिष्ठ) को प्रदान किया गया। साथ ही कण्ठपाठ प्रतियोगिता के अन्तर्गत लगभग 30 विद्यार्थियों को भी पुरस्कृत किया गया।

कार्यक्रम में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, डॉ. दीपकजी जैन वैद्य, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री, श्री कैलाशचंदजी सेठी, श्री सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, श्री शांतिलालजी जैन अलवरवाले, श्रीमती कमला भारिल्ल, श्रीमती सुशीला जैन आदि अनेक महानुभाव उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय के उपप्राचार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया। **– जिनकुमार शास्त्री, अधीक्षक**

आगामी कार्यक्रम...

(1) इस 50वीं स्वर्ण जयंती ज्ञानोत्सव के अवसर पर बण्डा में 50 गाँवों में 50 बाल संस्कार शिविरों का आयोजन दिनांक 27 अप्रैल से 4 मई तक किया जा रहा है। इसमें एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं डॉ. दीपकजी जैन वैद्य जयपुर पधार रहे हैं। यदि आप अपने मंदिर में शिविर लगाना चाहते हैं, तो संपर्क करें – **पण्डित संदीप शास्त्री (09783414578)**

(2) झालावाड़, झालरापाटन, मंडाना, बारां आदि 51 स्थानों पर दिनांक 5 से 13 मई तक सातवाँ बाल संस्कार शिविर लगाया जा रहा है।

(3) भिण्ड, ग्वालियर, मुरैना, शिवपुरी आदि एवं उत्तरप्रदेश के इटावा, औरया, मैनपुरी आदि कुल 101 स्थानों पर दिनांक 2 से 11 जून तक 12वाँ सामूहिक जैन बाल संस्कार शिविर का आयोजन हो रहा है।

(4) अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन इन्द्रप्रस्थ धर्मांचल के अन्तर्गत श्री कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट दिल्ली एवं अ.भा. जैन युवा फैडरेशन मेरठ के तत्त्वावधान में दिल्ली, उत्तरप्रदेश, हरियाणा के विभिन्न 40 स्थानों पर दिनांक 12 से 19 जून तक पाँचवाँ जैन जागृति शिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। यदि आप अपने मंदिर में शिविर लगाना चाहते हैं, तो संपर्क करें – **पण्डित विवेक शास्त्री, दिल्ली व सौरभ जैन मेरठ (09818459105, 09897241464)**

(5) नागपुर में दिनांक 29 मई से 5 जून तक आवासीय शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

(6) जसवंतनगर (उ.प्र.) में दिनांक 28 मार्च से 4 अप्रैल तक सिद्धचक्र मंडल विधान का आयोजन किया जा रहा है।

सभी साधर्मीजन शिविरों में पधारकर अवश्य लाभ लें।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 13 मार्च 2016

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127